घरेलू हिंसा से बचने के बताए गुर

वाराणसी (ब्यूरो)। महिलाओं को घरेलू हिंसा को पहचानने, उससे निबटने के उपाय महिलाओं को बताए गए और सामाजिक एवं कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया। ब्रेकथ्रू द्वारा बेल बजाओ अभियान को व्यापक स्तर से प्रसारित करने और महिलाओं को जोड़ने के उद्देश्य से छात्र-छात्राओं एवं संगठनों द्वारा आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए महिलाओं के अधिकारों के लिए अभियान छेड़ने वाली संस्था ब्रेकथ्रू की ओर से काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययन पीठ के सभागार में 'अस्तित्व' नामक बैठक एवं कार्यशाला आयोजित की गई।

न करें घरेलू हिंसा को नजरअंदाज

वाराणसी। घरेलू हिंसा को नजरअंदाज न करें। ये विचार गुरुवार को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययन पीठ के सभागार में घरेलू हिंसा के लिए कार्य रही ब्रेक थ्रू संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में रखा गया।

ब्रेक थ्रू की शिक्षा निदेशक सुनीता मेनन के अनुसार 2005 में आए प्रोटेक्शन ऑफ विमेन अगेन्स्ट डोमेस्टिक वॉयलेंस एक्ट (पीडब्ल्यूडीवीए) के बाद भी आज चालीस प्रतिशत महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं। उन्होंने बताया कि घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने और लोगों में जन जागरूकता फैलाने के लिए संस्था द्वारा महिलाओं को नहीं बल्कि युवाओं को भी ट्रेनिंग दी जा रही है। इस मौके पर ब्रेक थ्रू संस्था के साथ कार्य कर रहीं अन्य संस्थाओं ने भी अपने विचार रखे।

ब्रेक थ्रू ने एक लडाई-अस्तित्व को किया प्रस्तुत

वाराणसी घर तथा समाज में महिलाओं की पहचान, गरिमा तथा उनके अधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रेकथ्रू ने महिला पक्षधर मीटिंग अस्तित्व आयोजित की। यह कार्यक्रम काशी विद्यापीठ बनारस में हुआ जिसमें 350 से अधिक महिलाओं तथा छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा (छड्ड)तथा प्रोटेक्शन ऑफ वूमैन एगेन्स्ड डोमेस्टिक वॉयलेंस एक्ट के मुद्दे को उजागर करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन ब्रेकथ्रू, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के स्टाफ तथा छात्रों तथा 350 सामुदायिक महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से रचनात्मक तरीके से महिला अधिकारों के संदेश लिखे गुब्बारों को हवा में छोड कर किया गया। किसी समय ये महिलाएं अपने घर से बाहर कदम रख पाने में असमर्थ थी और आज अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती हैं, जिसमें घर के बाहर जाकर काम करना, अपनी स्वयं की संस्थाएं स्थापित करना, अपने समुदायों की यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्य की देखभाल करना तथा महिलाओं के अधिकारों को प्रोत्साहित करना शामिल है। ब्रेकथ्रू की महिला पक्षधर सभा कई सिविल सोसायटी संस्थाओं को साथ लेकर आई जिसमें महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के मुद्दे पर सहभागी शिक्षण केंद्र, मोहाए, विद्यावासिनी, पॉजिटिव लीविंग नेटवर्क, दीनदयाल उपाध्याय हस्पताल सामाजिक कार्य विभाग काशी विद्यापीठ, एएएलआई तथा प्रोटेक्शन अधिकारी जैसी सरकारी तंत्र ने अपने कार्य, आवाज तथा विचारों का सांझा किया। कार्यक्रम पर और अधिक प्रकाश डालते हुए ब्रेकथ्रू की शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेनन ने कहा, महिलाओं के विरूद्ध हिंसा विशेषकर घरेलू हिंसा नजरअंदाज तथा बिना रिपोर्ट किए रह जाती है। अस्तित्व ब्रेकथ्रू का एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा उत्तर प्रदेश में घरेलू हिंसा की गम्भीरता उजागर हो तथा महिलाओं के विरूद्ध हिंसा को रोकने करने के लिए पुरूष, महिलाएं, समुदाय, सिविल सोसायटी सांझेदार तथा सरकारी एजेंसियां को एक साथ लाया जा सके, जिससे सेवाओं को उन तक पहुँचाया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि उत्तर प्रदेश तथा वाराणसी में महिलाएं अपने सम्मान तथा गरिमा के साथ रहेंगी।

महिलाएं अपने अधिकारको पहचानें-ब्रेकथ्रू

वाराणसी। घर तथा समाजमें महिलाओंकी पहचान, गरिमा तथा उनके अधिकारोंको प्रोत्साहित करनेके लिए ब्रेकथ्रूने महिला पक्षधर मीटिंग अस्तित्व आयोजित की। यह कार्यक्रम काशी विद्यापीठमें हुआ जिसमें ३५० से अधिक महिलाओं तथा छात्रोंने सक्रिय रूपसे भाग लिया। कार्यक्रममें घरेलू हिंसा तथा प्रोटेक्शन आफ वूमैन एगेंस्ट डोमेस्टिक वायलेंस एक्स २००५ के मुद्देको उजागर करना था। कार्यक्रम उद्‌घाटन ब्रेकथ्रू, काशी विद्यापीठके स्टाफ, छात्रों तथा ३५० सामुदायिक महिलाओं द्वारा सामूहिक रूपसे रचनात्मक तरीकेसे महिला अधिकारोंके संदेश लिखे गुब्बारोंको हवामें छोड़ कर दिया गया। कार्यक्रमपर प्रकाश डालते हुए ब्रेकथ्रूकी शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेननने कहा, महिलांके विरुद्ध हिंसा विशेषकर घरेलू हिंसा नजरअंदाज तथा बिना रिपोर्ट किये रह जाती है। अस्तित्व ब्रेकथ्रूका एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा उत्तर प्रदेशमें घरेलू हिंसाकी गम्भीरता उजागर हो तथा महिलाओंके विरुद्ध हिंसा को रोकने करनेके लिए पुरुष, महिलाएं, समुदाय, सिविल सोसायटी साझेदार तथा सरकारी एजेंसियांको एक साथ लाया जा सके, जिससे सेवाओंको उनतक पहुंचाया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि उत्तर प्रदेश तथा वाराणसीमें महिलाएं अपने सम्मान तथा गरिमाके साथ रहेंगी। अंतमें सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

घरेलू हिंसा के खिलाफ जलाई अलख

वाराणसी। काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययनपीठ सभागार में गुरुवार को सामाजिक संगठन 'ब्रेकथ्रू' की ओर से घरेलू हिंसा विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें कई महिलाओं और सामाजिक संगठनों ने घरेलू हिंसा की घटनाओं के साथ इनसे बचाव के कानूनी उपायों की भी जानकारी दी।

डेढ़ लाख महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार

◆ नजरअंदाज करने से बढ़ी समस्याएं

वाराणसी : भारत में प्रति छह मिनट पर एक महिला घरेलू हिंसा की शिकार होती है। प्रति 60 मिनट में एक महिला दहेज को लेकर हिंसा की शिकार हो रहीं है। वहीं प्रतिवर्ष एक से डेढ़ लाख महिलाएं के साथ किसी न किसी रूप में घरेलू हिंसा भुगत रही है। इसमें घर के भीतर हिंसा की शिकार होने वाली महिलाओं की संख्या लगभग 50 हजार के करीब हैं।

यह घटनाएं महिलाओं द्वारा घरेलू हिंसा को नजरअंदाज करने के कारण बढ़ती जा रही है। यह आंकड़ा गुरुवार को ब्रेकथ्रू सामाजिक संस्था की ओर से काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययन पीठ सभागार में आयोजित कार्यक्रम में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. संजय ने प्रस्तुत किया। घरेलू हिंसा पर महिलाओं को जागरूक कराने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 350 महिलाओं ने भाग लिया। इसमें उन्हें प्रोजक्टर व कठपुतलियों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से घरेलू हिंसा के प्रति जागरूक किया गया। महिलाओं को शारीरिक, मौखिक, आर्थिक व यौनिक हिंसा के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही प्रोटेक्शन ऑफ वूमेन एगेंस्ट डोमेस्टिक वॉयलेंस एक्ट 2005 में दिए गए अधिकारों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम का उद्‌घाटन छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष प्रो. मुन्नीलाल ने किया। संचालन संयुक्त रूप से अनुज, उर्वशी व सुनीता मेनन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संजय ने किया।

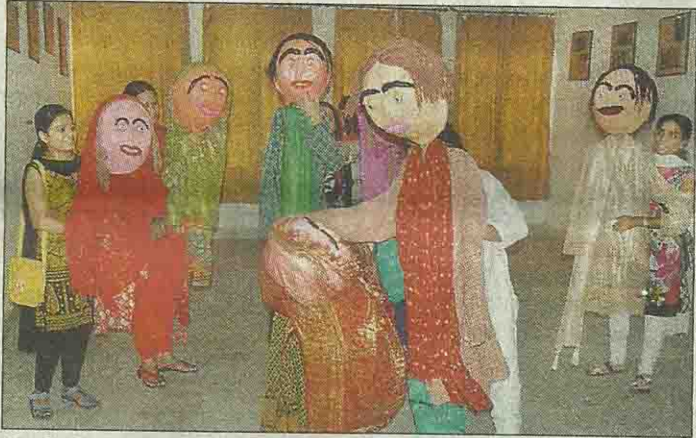

विद्यापीठ के गांधी सभागार में कठपुतली नृत्य का एक दृश्य। -जागरण

DOMESTIC VIOLENCE

'Ensure women's dignity'

HT Correspondent
htvaranasi@hindustantimes.com

VARANASI: "Merely 3% people knew about the Protection of Women From Domestic Violence Act 2005 two years ago, but now the level of awareness has risen to 16% due to efforts made by our organisation," said Sunita Menon, the Director of the Education of Breakthrough.

She was talking about the findings of the survey that the organisation had conducted in Lucknow, Kanpur, Varanasi and Muzzafarnagar districts last year.

The Education of Breakthrough is a global human rights organisation that uses the power of media, pop culture and community mobilisation to encourage people to fight for dignity, equality, and justice.

Menon was addressing a gathering of 350-odd women and students during a meeting that the organisation had held here on Thursday. The organisation named the meeting "Astitva".

The purpose of the meeting was to promote women's identity, dignity and rights in their homes and in the society.

"Violence against women, especially domestic violence, is usually ignored and underreported. Our effort is to highlight the enormity of domestic violence in UP and bring together men, women, the civil society, and government agencies to curb violence against women and ensure that women live with dignity and respect in Varanasi and the entire state," Menon added.

Girls associated with the organisation also presented a puppet show on the occasion.

Some 12 minority community girls from Lucknow presented the programme.

Through the creative use of life-size puppets and training imparted the global human rights organisation, these girls have taken on a leadership role in educating people across Uttar Pradesh about the need to stop violence against women.

In the past, the organisation had launched the 'Bell Bajao' campaign against domestic violence in India on August 20, 2008.

■ Education of Breakthrough members performing a skit through puppets during the meeting on domestic violence in Varanasi on Thursday. SHANKAR CHATURVEDI/HTPHOTO

> 'Our effort is to highlight the enormity of domestic violence in UP and bring together men, women, the civil society, and govt agencies to curb violence against women'
>
> SUNITA MENON
> Director, Education of Breakthrough

SAFEGUARD YOUR RIGHTS

■ Director 'Education of Breakthrough' Sunita Menon speaking during the meeting.

■ Merely 3% people knew about 'The Protection of Women From Domestic Violence Act 2005' two years ago, but now the level of awareness has risen to 16%.

■ Sunita menon, director of Education of Breakthrough made several efforts to spread awareness about 'The Protection of Women From Domestic Violence Act 2005.'

■ The Education of Breakthrough is a global human rights organisation that uses the power of media, pop culture and community mobilisation to encourage people to fight for dignity, equality, and justice.

■ In a meeting named 'Astitva,' she promoted women's identity, dignity and their rights in homes and society.

'IMPLEMENT LAW EFFECTIVELY IN UTTAR PRADESH'

VARANASI: "The law protecting women from domestic violence needs to be implemented effectively in the state."

This is what the report of a survey conducted in 40 districts of Uttar Pradesh in the year 2010 says.

The Association for Advocacy and Legal Initiative (AALI), a Lucknow-based non-governmental organisation (NGO), had conducted the survey with the help of 100 other organisations.

The organisation works with local, national, and international groups to ensure that women's human rights are not violated. The NGO in particular focuses on ending violence against women.

"There are no fulltime or independent protection officers appointed by the state government. Presently the said work is delegated to officers of fisheries and statistics departments. They are already overburdened and hence are not in a position to implement the said act effectively in the state," said AALI programme officer Avantika Srivastava while talking to HT here on Thursday.

"We come up with various facts showing that the Protection of Women From Domestic Violence Act 2005, which was implemented with much expectation, is not working properly across the state," she added.

She added the state was yet to create awareness about the law. Only 5,638 cases of domestic violence had been registered by protection officers and service providers in UP between 2006 and Sept 2010, she said.

अस्तित्व ब्रेक थ्रू द्वारा महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा रोकने पर जोर

वाराणसी। घर तथा समाज में महिलाओं की पहचान, गरिमा तथा उनके अधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रेकथ्रू ने महिला पक्षधर मीटिंग अस्तित्व आयोजित की। यह कार्यक्रम काशी विद्यापीठ बनारस में हुआ जिसमें 350 से अधिक महिलाओं तथा छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा (DV)तथा प्रोटेक्शन ऑफ वूमैन एगेंस्ड डोमेस्टिक वॉयलेंस एक्ट 2005(PWDVA), के मुद्दे को उजागर करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन ब्रेकथ्रू, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के स्टाफ तथा छात्रों तथा 350 सामुदायिक महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से रचनात्मक तरीके से महिला अधिकारों के संदेश लिखे गुब्बारों को हवा में छोड कर किया गया। किसी समय ये महिलाएं अपने घर से बाहर कदम रख पाने में असमर्थ थी और आज अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती हैं, जिसमें घर के बाहर जाकर काम करना, अपनी स्वयं की संस्थाएं स्थापित करना, अपने समुदायों की यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्य की देखभाल करना तथा महिलाओं के अधिकारों को प्रोत्साहित करना शामिल है। ब्रेकथ्रू की महिला पक्षधर सभा कई सिविल सोसायटी संस्थाओं को साथ लेकर आई जिसमें महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के मुद्दे पर सहभागी शिक्षण केंद्र, मोहाए, विद्यावासिनी, पॉजिटिव लीविंग नेटवर्क, दीनदयाल उपाध्याय हस्पताल, सामाजिक कार्य विभाग काशी विद्यापीठ, एएएलआई तथा प्रोटेक्शन अधिकारी जैसी सरकारी तंत्र ने अपने कार्य, आवाज तथा विचारों का सांझा किया।

कार्यक्रम पर और अधिक प्रकाश डालते हुए ब्रेकथ्रू की शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेनन ने कहा, महिलाओं के विरूद्ध हिंसा विशेषकर घरेलू हिंसा नजरअंदाज तथा बिना रिपोर्ट किए रह जाती है। अस्तित्व ब्रेकथ्रू का एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा उत्तर प्रदेश में घरेलू हिंसा की गम्भीरता उजागर हो तथा महिलाओं के विरूद्ध हिंसा को रोकने करने के लिए पुरूष, महिलाएं, समुदाय, सिविल सोसायटी सांझेदार तथा सरकारी एजेंसियां को एक साथ लाया जा सके, जिससे सेवाओं को उन तक पहुॅचाया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि उत्तर प्रदेश तथा वाराणसी में महिलाएं अपने सम्मान तथा गरिमा के साथ रहेंगीं। कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल था।

समाज में महिलाओं के अधिकारों के लिये ब्रेकथ्रू ने एक लड़ाई प्रस्तुत की

▪ वाराणसी। घर तथा समाज में महिलाओं की पहचान, गरिमा तथा उनके अधिकारों को प्रोत्साहि करने के लिये ब्रेकथ्रू ने महिला पक्षधर मीटिंग अस्तित्व आयोजित की। यह कार्यक्रम काशी विद्यापीठ बनारस में हुआ जिसमें ३५० से अधिक महिलाओं तथा छात्रों ने सक्रिय यप से भाग लिया। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा तथा प्रोटेक्शन ऑफ वुमैन एगेंस्ड डोमेस्टिक वॉयलेंस एक्ट २००५ के मुद्दे को उजागर करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन ब्रेकथ्रू, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के स्टाफ तथा छात्रों तथा ३५० सामुदायिक महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से रचनात्मक तरीके से महिला अधिकारों के संदेश लिखे गुब्बारों को हवा में छोड़ कर किया गया। किसी समय ये महिलाएं अपने घर से बाहर कदम रख पाने में असमर्थ थी और आज अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है, जिसमें घर के बाहर जाकर काम करना, अपनी स्वयं की संस्थाएं स्थापित करना, अपने समुदायों की यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्य की देखभाल करना तथा महिलाओं के अधिकारों को प्रोत्साहित करना शमिल है। ब्रेकथ्रू की महिला प[illegible]ा कई सिविल सोसाइटी संस्थाओं को साथ लेकर आई जिसमें महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के मुद्दे पर सहभागी शिक्षण केन्द्र, मोहाए, विद्यावासिनी, पॉज़िटिव लीविंग नेटवर्क, दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल, सामाजिक कार्य विभाग काशी विद्यापीठ आदि ने आवाज तथा विचारों को सांझा किया।

महिला हिंसा पर गांधी अध्ययन पीठ में कार्यक्रम का उद्घाटन कठपुतली शो व घरेलू हिंसा के खिलाफ नारे लिखे गुब्बारे उड़ाकर किया गया। फोटो : एसएनबी

महिलाओं को मिलना चाहिए हक

वाराणसी (एसएनबी)। महिलाओं को समाज में उनका वाजिब हक दिलाने के लिए समाज में व्याप्त अवधारणा को बदलना होगा। दुनिया की आधी आबादी आज भी अपने ही घर में डरकर जीवन यापन कर रही है। ऐसी परिस्थिति को बदलना होगा। गुरुवार को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययन सभागार में सामाजिक संस्था ब्रेकथ्रू द्वारा महिला हिंसा पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में विद्यावासिनी, पॉजिटिव लीविंग नेटवर्क, दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल, विद्यापीठ का एमएसडब्लू विभाग, एएएलआई व प्रोटेक्शन संस्था के सदस्यों ने भाग लिया। परिचर्चा में बोलते हुए ब्रेकथ्रू की शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेनन ने कहा कि महिलाएं आज अपने ही घर में सबसे ज्यादा प्रताड़ित की जाती हैं। उन्होंने कहा कि इसमें सबसे ज्यादा कष्टकर स्थिति तब होती है जब कोई महिला इसके खिलाफ आवाज उठाती है, तो उसकें आवाज को दबा दिया जाता है। उन्होंने कहा कि इसको रोकने के लिए पुरुष, महिलाएं, सिविल सोसायटी के लोगों को आगे आना होगा। कार्यक्रम का उद्घाटन घरेलू हिंसा के खिलाफ नारे लिखे गुब्बारों को हवा में उड़ाकर किया गया।

ब्रेकथ्रू ने एक लड़ाई अस्तित्व को किया प्रस्तुत

वाराणसी। घर तथा समाज में महिलाओं की पहचान, गरिमा तथा उनके अधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रेकथ्रू ने महिला पक्षधर मीटिंग अस्तित्व आयोजित की। यह कार्यक्रम काशी विद्यापीठ बनारस मेंहुआ जिसमें 350 से अधिक महिलाओं तथा छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा तथा प्रोटेक्शन आफ वूमैन एगेंस्ड डोमेस्टिक वायलेंस एक्ट 2005 के मुद्दे को उजागर करना था। कार्यक्रम का उदघटन ब्रेकथ्रू महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के स्टाफ तथा छात्रों तथा 350 सामुदायिक महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से रचनात्मक तरीके से महिला अधिकारों के संदेश लिखे गुब्बारों को हवा में छोड़कर किया गया।

किसी समय ये महिलाएं अपने घर से बाहर कदम रख पाने में असमर्थ थी और आज अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है। कार्यक्रम पर और अधिक प्रकाश डालते हुए ब्रेकथ्रू की शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेनन ने कहा कि महिलाओं के विरुद्ध विशेषकर घरेलू हिंसा नजरअंदाज तथा बिना रिपोर्ट किए रह जाती है। अस्तित्व ब्रेकथ्रू का एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा उत्तर प्रदेश में घरेलू हिंसा की गंभीरता उजागर हो तथा महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को रोकने करने के लिए पुरुष महिलाएं समुदाय सिविल सोसायटी साझेदार तथा सरकारी एजेंसिया को एक साथ लाया जा सके।

ब्रेकथ्रू ने एक लड़ाई 'अस्तित्व' को किया प्रस्तुत

वाराणसी। घर तथा समाज में महिलाओं की पहचान, गरिमा तथा उनके अधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रेकथ्रू ने महिला पक्षधर मीटिंग अस्तित्व आयोजित की। यह कार्यक्रम काशी विद्यापीठ बनारस में हुआ जिसमें 350 से अधिक महिलाओं तथा छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम में घरेलू हिंसा तथा प्रोटेक्शन ऑफ वूमैन एगेंस्ट डोमेस्टिक वॉयलेंस एक्ट 2005, के मुद्दे को उजागर करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन ब्रेकथ्रू, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के स्टाफ तथा छात्रों तथा 350 सामुदायिक महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से रचनात्मक तरीके से महिला अधिकारों पर चर्चा किया। ब्रेकथ्रू की महिला पक्षधर सभा कई सिविल सोसायटी संस्थाओं को साथ लेकर आई जिसमें महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के मुद्दे पर सहभागी शिक्षण केंद्र, मोहाए, विद्यावासिनी, पॉजिटिव लीविंग नेटवर्क, दीनदयाल उपाध्याय हस्पताल, सामाजिक कार्य विभाग काशी विद्यापीठ, एएएलआई तथा प्रोटेक्शन अधिकारी जैसी सरकारी तंत्र ने अपने कार्य, आवाज तथा विचारों का सांझा किया इस कार्यक्रम पर ब्रेकथ्रू की शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेनन ने और अधिक प्रकाश डाला।

'Astitva' to promote women's identity

Varanasi: Breakthrough, a human rights organisation, organised a women's advocacy meeting 'Astitva' for promoting women's identity, dignity and rights, within home and society at the Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth (MGKV) on Thursday.

Over 300 women and students took part in the programme to highlight the issue of domestic violence and the Protection of Women against Domestic Violence Act 2005.

Speaking on the occasion, Sunita Menon of the organisation said violence against women, especially domestic violence, was usually ignored and underreported.

'Astitva' was an effort to highlight the enormity of domestic violence in UP and to bring together men, women, communities civil society partners and government agencies to curb violence against women, provide access to services and ensure that women live with dignity and respect, she said.

A cultural programme was also organised on the occasion featuring dance performance by the students of MGKV and puppet theatre group of the organisation. TNN

महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा हो रही नजर अंदाज -सुनीता मेनन

*अपने अधिकार पहचान अस्तित्व के लिए महिलाएं हुई जागरूक,सेमिनार में खुलकर विचारों को किया साझा

वाराणसी। घर तथा समाज में महिलाओ के साथ हिंसा विशेषकर घरेलु हिन्सा को लगातार नजर अंद्रांज कर इसकी रिर्पोट भी नहीं दर्ज हो रही है। उक्त बाते गुरूवार को सामाजिक एवं मानवाधिकार क्षेत्र में कार्य कर ही संस्था ब्रेकथ्रू की शिक्षा निदेशक सुश्री सुनीता मेनन ने कही । मौका था एमजी काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययन पीठ सभागार में संस्था द्वारा आयोजित अस्तित्व सेमिनार का उन्होंने महिलाओं की पहचान गरिमा और उनके अधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला सेमिनार में विद्यापीठ की छात्राओं सहित ३५० सामुदायिक महिलाओ ने घरेलु हिंसापर अपने कार्य आवाज विचारो को सांझा किया इसमें सिविल सोसाइटी संस्थाओं के साथ मोहाए विद्यावासिनी पॉजिटव लीविंग नेटवर्क दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल समाजिक कार्य विभाग विद्यापीठ एएएलआई आदि संस्थाओ ने प्रतिनिधियों ने शिरकत किया इसके पहले कार्यक्रम का उदघाटन महिला अधिकारों के संदेश लिखे गुब्बारों को हवा में उड़ाकर किया गया। कार्यक्रम में अपने साथ सरकारी एजेन्सियो को जोड़ने पर बल दिया गया।